International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management (IJARASEM)

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal |

| Volume 5, Issue 1, January 2018 |

मृदुला सिन्हा के उपन्यासों में मानवीय मूल्यों का संवर्धन

डॉ. अनिता सिंह

सहायक प्रोफेसर, हिंदी विभाग, डी. बी. एस. कॉलेज, गोविंद नगर, कानपुर, उत्तर प्रदेश, भारत

सार

मृदुला सिन्हा आधुनिक युग की लेखिका हैं। उन्होंने अपनी समस्त कहानियों में आधुनिकता, सामाजिक विसंगतियों, आधुनिक बोध, मानवीय मूल्यों का विघटन, जीवन दर्शन, मशीनी युग, कुंठा आदि का सजीव चित्रण किया है। साहित्य एक ऐसा दर्पण है, जिसमे मानव जीवन का ही वर्णन नहीं, अपितु आस–पास के परिवेश का भी चित्रण होता है। साहित्यकार सामजिक प्राणी होता है। वह अपने युग के विचारों को एकत्र करके साहित्य के रूप में व्यक्त करता है। इनकी प्रथम कहानी 'साक्षात्कार' थी। जिसमे इन्होंने भारतीय गाँवों की बदहाली, बेबसी और गरीबी का चित्र दिखाया है। मृदुला जी का उपन्यास 'ज्यों मेहँदी को रंग', जो पूर्णरूपेण विकलांग पात्रों के जीवन संघर्ष, उनकी समस्याओं एवं चुनौतियों को यथार्थ रूप से उजागर करता तथा विकलांगों को सामाजिक समता एवं आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर होकर जीवन जीने की राह दिखाता है। सन् 1981 ई. में रचित ये उपन्यास 'अंतरर्राष्ट्रीय विकलांगता दशक' (1981-1991) के महत्त्व और उसके उद्देश्य को न केवल वैश्विक स्तर पर अपितु भारत में भी स्थापित करने का मात्र साहित्यिक प्रयास ही नहीं वरन् सामाजिक परिवर्तन की दिशा में महत्वपूर्ण कदम था। उपन्यास का विमोचन करने से पूर्व स्वर्गीय जैनेन्द्र कुमार ने लेखिका से पूछा था— "इतने सारे विषय हैं उपन्यास लिखने के लिए तुमने दिव्यांगों की समस्याएं क्यों चुनी? अनायास मेरी आँखों से अश्रु-धारा बह चली थी। उन्होने कहा- समझ गया मैं तभी ये रचना अपने भाव, भाषा औऱ कथानक पर खरी उतरी है।"

परिचय

मृदुला सिन्हा जी की 'ढाई बीघा जमीन' (कहानी संग्रह) 2013 में प्रकाशित हुई थी। इस कहानी संग्रह में उन्नीस कहानियाँ हैं। भारतीय चिंतन परंपरा से ओतप्रोत मृदुला सिन्हा जी की सभी कहानियाँ मानव जीवन को सुमार्ग दिखाती हैं। उनके सभी कहानियों में कहीं न कहीं जीवन मूल्य के साथ भारतीयता का पक्ष अवश्य जुड़ा हुआ होता है। उनकी कहानियों में आद्योपांत जीवन के बोध के साथ सामाजिक, राजनितिक, धार्मिक और सांस्कृतिक मूल्यों का बोध होता है।प्रथम अध्याय 'यथार्थ और सामाजिक यथार्थ : सैद्धांतिक परिप्रेक्ष्य' इस अध्याय में अर्थ परिभाषा स्वरुप के विषय पर प्रकाश डाला गया है तथा आदर्शवाद और 'यथार्थ, कल्पना और 'यथार्थ, [1]यथार्थ के विविध आयाम और सामाजिक यथार्थ पर प्रकाश डाला गया है।द्वितीय अध्याय "मृदुला सिन्हा के कहानी संग्रह 'ढाई बीघा जमीन' : एक सर्वेक्षण" के अंतर्गत सामाजिक, आर्थिक, राजनितिक, धार्मिक और मनोवैज्ञानिक कहानियों की विस्तृत जानकारी दिया गया है। तृतीय अध्याय 'विवेच्य कहानियों में राजनितिक यथार्थ' से संबंधित भ्रष्टाचार और रिश्वत खोरी, राजनैतिक घटनाचक्र, जनता और सत्ता का संबंध तथा अन्य संबंधों का वर्णन किया गया है।चतुर्थ अध्याय 'विवेच्य कहानी संग्रह में सामाजिक यथार्थ' के अंतर्गत कहानियों में आए पारिवारिक संबंध, स्त्री-पुरुष संबंधों, संतान की समस्या, संबंधों का टूटना, नारी जीवन का यथार्थ और सामाजिक मूल्यों के यथार्थ का वर्णन किया गया है। पंचम अध्याय 'विवेच्य कहानियों में आर्थिक एवं धार्मिक यथार्थ' के अंतर्गत आर्थिक विपन्नता, मध्य, निम्न और निम्न मध्य वर्ग, आर्थिक जीवन का यथार्थ, [2]जीविकोपार्जन के साधन, धार्मिक जीवन का यथार्थ आदि वर्गीय व्यवस्था का वर्णन किया गया है।षष्ठम अध्याय 'विवेच्य कहानियों का भाषा वैशिष्ट्य' शब्द सम्पदा, तत्सम, तद्भव, देशज, विदेशी, मुहावरें, कहावतें, लोकोक्तियाँ, उक्तियाँ, विविध शैलियाँ, वर्णनात्मक, विवेचनात्मक, आत्मकथात्मक, संवादात्मक तथा पूर्वदीप्ती शैलियों का वर्णन किया गया है। उपसंहार के अंतर्गत संपूर्ण लघु शोध प्रबंध की उपलब्धियों को संग्रह के रूप में प्रस्तुत करते हुए, मृदुला सिन्हा जी की कहानी संग्रह 'ढाई बीघा जमीन' में उनके योगदान को रेखांकित किया गया है।उच्च शिक्षा और शोध संस्थान दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, हैदराबाद आचार्य एवं अध्यक्ष डॉ. पी. राधिका के प्रति अपना आभार व्यक्त करते हुए मैं गौरवान्वित हूँ। [3] प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध, संस्थान की प्रवक्ता डॉ. बलविंदर कौर जी के शोध-निर्देशन में संपन्न हुआ। उनकी प्रेरणा, स्नेहपूर्ण व्यवहार एवं प्रोत्साहन के फलस्वरूप मेरे विचार व्यवहार के धरातल पर पहुँच पाए। शोध अवधी के दौरान उन्होंने जो दिशा-निर्देश दिया वे मेरे लिए अमूल्य निधि है। अतः मैं उनके प्रति सदैव आभारी रहूँगी। संस्थान के रीडर डॉ विजय हिन्दू राव पाटिल तथा प्रवक्ता डॉ जी. नीरजा एवं डॉ. गोरखनाथ तिवारी जी के प्रति भी आभार व्यक्त करती हूँ, जिनके अमूल्य सुझावों द्वारा प्रत्यक्ष रूप में मुझे महती सहायता प्राप्त हुई। संस्थान के ग्रंथपाल संतोष कांबले ने शोध अवधि के दौरान कभी पुस्तकों की कमी नहीं होने दी।[4] अतः मैं उनके प्रति आभारी हूँ। मैं जिन रचनाकारों की समृद्धशाली रचनात्मकता से अपने उद्देश्यों में सफल हुई, उन सभी के प्रति जीवनपर्यंत ऋणी रहूँगी। इस अवसर पर मैं अपने जन्मदाता माता-पिता के प्रति हार्दिक आभार प्रकट करते हुए नतमस्तक हूँ। मैं अपने पति के सहयोग, प्रेरणा और मार्गदर्शन का सदैव आभरी हूँ जिन्होंने उम्र के इस पड़ाव में मेरी प्रत्येक जिद्द को निरंतर बर्दास्त

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal |

| Volume 5, Issue 1, January 2018 |

किया और कदम-कदम पर मेरा साथ दिया। आपके समर्थन के बगैर यह कार्य बिल्कुल असम्भव था। संस्था में बिहार प्रांत से कृत्रिम पैर लगवाने आयी शालिनी की जीवन -गाथा इस उपन्यास की मुख्य कथा है। बचपन से चंचल स्वभाव और अपनी सहेलियों से तेज चलने वाली शालिनी विवाह के पश्चात पति से भी आगे निकल जाने की उसकी प्रवृत्ति अक्षूण्ण रही। संस्था में आने से पूर्व उसका जीवन खुशहाल था। पति राजेश, सासु माँ तथा परिवार के सभी सदस्य उसे प्रेम करते थे। पति के साथ पहलेजा घाट से स्टीमर की यात्रा पूरी कर, उतरते समय स्टीमर औऱ डेक के बीच फँसकर, उसके दोनों पैर कट कर गंगा की तेज धारा में समाहित हो गए। यहीं से शालिनी के जीवन में विकलांगता के दंश का आरम्भ हुआ, जिसने उसके जीवन की दिशा और उद्देश्य बदल दिया। यहाँ आकर उसने जाना— "एक के लिए जीने से बेहतर है अनेक के लिए जीना।"[5]

शर्मा जी के माध्यम से उसे उपचारार्थ संस्था में लाया जाता है। शर्मा जी शालिनी के पिता तथा दद्दा जी के मित्र थे। आरम्भ में पति समेत परिवार के अन्य सदस्य उसकी सेवा और देख-भाल में सन्नद्ध रहे। लेकिन अनिश्चितता की स्थिति और लंबे उपचार की मानसिकता के कारण वे उससे कटते चले गए औऱ मात्र चौबीस वर्ष की शालिनी जीवन में बिल्कुल अकेली रह गई । जीवन उसके लिए निरर्थक और बोझ बन गया। कृत्रिम पैरों के सहारे जीवन यापन को वह निम्न दर्जे का दायित्व निर्वाह मानने लगी थी । इधर उसके पति राजेश को माँ औऱ सगे-संबंधी दूसरा विवाह करने के लिए विवश करते हैं । पत्नी प्रेम में पगे राजेश ने पहले इनकार कर दिया— "मैं नहीं चाहता बैसाखी पे बैसाखी लगाना।"[6] परंतु सबकी एक ही जिद और रट के कारण वह द्वन्द्वों में घिरने लगा। शालू ने जब सास को भी सांत्वना देनी चाही तो वह बिलख उठी थीं— "बहू मेरे बेटे का क्या होगा? पूरी ज़िंदगी पड़ी है इसकी। सच ही तो कहा था सास ने बेटे के लिए माँ न सोचे तो कौन सोचे।" परिवार और पड़ोस सभी को राजेश के भावी जीवन की चिंता थी। शालिनी के लिए सबकी संवेदनाएं शून्य हो गई थीं। अस्पताल में खटिया पर पड़े उसने एक स्त्री स्वर सुना, जो न केवल उसे अपितु किसी भी संवेदनशील मनुष्य के मर्म को उद्वेलित कर देगा— "राजेश की माँ बेटे को समझाओ अभी वो नासमझ है। दुनियादारी समझता नहीं। पूरी ज़िंदगी पड़ी है उसकी। गाँव की किसी लड़की से शादी कर दो, जो उसे भी संभालेगी और खटिया पर पड़ी अपाहिज सौत को भी।"[7]

परिवार तथा समाज द्वारा उपेक्षित शालिनी को संस्था में आकर नया जीवन प्राप्त होता है। वह अपने अतीत को भूलाकर संस्था की जिम्मेदारियों को निभाती है। वह संस्था की विकलांग स्त्रियों को सिलाई-कढ़ाई और गुड़िया सिखाने और बनाने की जिम्मेदारी स्वयं लेती है। परंतु इन कामों से भी वह अपने जीवन में आई रिक्तता को पूर्ण करने का असफल प्रयास करती दिखाई देती है।[8] अपने जीवन से दुखी वह किसी औऱ को दुखी नहीं देखना चाहती है, जिसका प्रत्यक्ष प्रमाण उसके द्वारा निर्मित की गई अनेक गुड्डे-गुड़ियों की जोड़ियाँ हैं— "हँसती-खेलती, फूल तोड़ती, नाचती-गाती हाथ-मे-हाथ मिलाए चलती, नवदम्पत्ति की जोड़ी ही बना पाती थी शालिनी। कृष्ण के साथ राधा की अठखेलियाँ ही उतार पाती। भूल से उसने कभी विरहणी राधा नहीं बनाई। राम लक्ष्मण के साथ अनेक सीताएं बना गई, पुष्प वाटिका से लेकर वन-गमन तक की पर रावण के घर में बैठी सीता बनाना उसके वश की बात न थी। स्त्री का वह रूप उसे भाता ही नहीं था।" यद्यपि हिन्दी साहित्य में विकलांगता को आधार बना कर साहित्यकारों की छुट-पुट रचनाएं ही मिलती हैं किंतु जितनी सूक्ष्मता एवं गहराई से उपन्यासकार ने विकलांगों के विविध जीवन संघर्षों, उनकी सामाजिक, आर्थिक व राजनीतिक समस्याओं, पारिवारिक उपेक्षाओं, विकलांगता के कारण हो रहे मानवीय संबंधों के विघटन और इस विघटन की मानसिकता से उपजी स्वयं को पुनःस्थापित करने की चेतना की अभिव्यक्ति इस उपन्यास में हुई है, वह अन्यत्र दुर्लभ है।[9]उपन्यासकार ने विकलांगता के प्रति समाज में व्याप्त उस जड़ मानसिकता की ओर संकेत किया है, जहाँ मात्र विकलांग होने से व्यक्ति की जीवन जीने की इच्छाएं, आकांक्षाएं एवं आवश्यकताएं समाप्त नहीं होतीं । विकलांग व्यक्ति किसी अन्य लोक के प्राणी नहीं होते, बल्कि सामान्य जन की भाँति इसी समाज के अंग होते हैं । लेखिका ने इस मनोविज्ञान को उद्घाटित करते हुए लिखा है- "स्टीमर से उतरते वक्त शालिनी की दोनों टाँगे कट भर जाने से उसकी इच्छाएं, आकांक्षाएं खत्म नहीं हुई थीं। पूरा शरीर तो पड़ा ही था।"[10]

शालिनी एक शिक्षित, दृढ़-निश्चयी, स्वाभिमानी, तटस्थ एवं नेतृत्व क्षमता में कुशल है। दद्दा जी की अनुपस्थिति में वह संस्था की समस्त गतिविधियों एवं समस्याओं का निवारण बड़े धैर्य और कुशलता पूर्वक करती है। महेश द्वारा भोजनालय में किए गए विद्रोह के समय वह बड़े साहस और बुद्धिमता का परिचय देती है। इसी क्रम में जब उसे दर्शन के पाँव लग जाने पर भी भीख मांगने का रहस्य ज्ञात होता है, तो वह पहले प्रमाण एकत्र करती है और फिर उसके इस कृत्य पर साधिकार चाँटा भी जड़ देती है। लज्जित होने के बजाय यथार्थ के प्रति दर्शन का आक्रोश फूट पड़ता है— "भीख न मांगे तो क्या करें? पैर बन जाने से क्या मैं कलक्टर बन जाऊँगा? कुर्सी मिल जाएगी मुझे। कुर्सी तोड़ते बैठा रहूँगा। मुझे रोटी तो चाहिए।" दर्शन के मुख से आर्थिक विवशता की दासताँ सुनकर उसे अपने व्यवहार पर पश्चाताप भी होता है और वह दर्शन से क्षमा याचना का मन बना लेती है।[11]

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal |

| Volume 5, Issue 1, January 2018 |

विचार-विमर्श

उपन्यासकार ने शालिनी के रूप में एक ऐसे चरित्र की सृष्टि की है, जिसमें विषम परिस्थितियों से दो-दो हाथ करने की क्षमता है। खण्डित होकर पुनः संगठित होने की शक्ति है। अपने जीवन और अस्तित्व को पुनर्स्थापित करने का साहस है। संस्था में रहते हुए उसमें एक आशा की किरण बाकी थी कि शायद उसका पति और परिवार उसे स्वीकार कर लेंगे। किंतु जिस दिन शालिनी को यह ज्ञात होता है कि राजेश ने दूसरा विवाह कर लिया है। उसी क्षण वह स्वयं को तिरस्कृत और परावलम्बी जीवन से मुक्त कर लेती है। शर्मा जी के बार-बार आग्रह पर वह तटस्थ होकर कहती है— "मैं बिल्कुल ठीक हूँ। मेरी चिन्ता आप न करें। मैं जी लूँगी अपनी ज़िंदगी..." शालिनी के इस कथन में आत्मसम्मान के साथ अपनी विकलांगता को लेकर किसी प्रकार की आशंका नहीं है वह स्वयं को लेकर आश्वस्त है, क्योंकि उसे जीवन जीने की नई दृष्टि मिल गई है, जिसमें उसकी विकलांगता और उसका स्त्रीत्व बाधक नहीं है।लैंगिक विभेद और उपयोगितावादी सामाजिक संरचना की परम्परा सदियों से हमारे समाज में चली आ रही है। विकलांग स्त्री चाहे कितनी ही प्रतिभा सम्पन्न और बुद्धिमती क्यों न हो कदम-कदम पर उसे अपनी प्रतिभाशालिनी होने का प्रमाण प्रत्येक युग में प्रस्तुत करना पड़ा है। सुमन राजे अपनी पुस्तक 'हिन्दी साहित्य का आधा इतिहास' में लिखती हैं- "ऋषिकाओं में दो नाम ऐसे हैं अपाला और घोषा, दोनों को ही कुष्ठ रोग था । फलस्वरूप अपाला को पिता के घर रहना पड़ा और घोषा का विवाह नहीं हुआ। ...घोषा के सारे शरीर में रोम थे। इसलिए उनके पति उन्हें स्वीकार नहीं करते थे।" उन्होंने अपनी बौद्धिक क्षमताएं इतनी विकसित की कि नाम का औचित्य ही बदल गया। वेद और शास्त्र की अनेक शाखाएं उनके रोम हैं।कहना न होगा कि पितृसत्तात्मक व्यवस्था में स्त्रियों के जीवन के जिन पहलुओं पर पुरुषों का वर्चस्व होता है उनमें सबसे महत्वपूर्ण पक्ष स्त्री की प्रजनन क्षमता है। मानव सभ्यता के उदय के आरम्भिक दिनों में स्त्री को कबीले का संसाधन माना जाता था, जिससे वह जुड़ी होती थी। शनै-शनै अभिजात्य वर्ग के उदय के साथ स्त्री शासन समूहों के वंश की सम्पत्ति बन गई। हम देखते हैं कि सघन कृषि के विकास के साथ मानव श्रम का शोषण तथा महिलाओं का यौन नियंत्रण एक दूसरे से जुड़ गए। इस प्रकार स्त्री की यौनिकता पर नियंत्रण का प्रचलन आरम्भ हुआ, जो निजी सम्पत्ति के उदय और वर्ग आधारित शोषण के विकास के साथ तीव्र होता चला गया। आज भी वंश और परिवार को आगे बढ़ाने के लिए स्त्री को संतान उत्पत्ति का साधन ही माना जाता है। आधुनिक समाज भी इस विचार से अछूता नहीं।[12]

इस दृष्टि से विकलांग स्त्री को दोहरी उपेक्षा का शिकार होना पड़ता है। स्त्री को एकमात्र संतानोत्पत्ति का साधन मानने वाली यह पुरुषवादी मानसिकता विकलांग स्त्री से विवाह करने से इस लिए कतराता है, क्योंकि उसकी दृष्टि में उसकी यौनिकता नगण्य है, वह विकलांग पहले है और स्त्री बाद में। कहीं न कहीं उनके सोच में यह रूढ़िवादी भय घर किए रहता है कि शारीरिक रूप से अक्षम स्त्री गृहस्थ जीवन का निर्वाह भलिभाँति नहीं कर सकती है तथा उससे उत्पन्न होने वाली संतान भी विकलांग ही होगी, जिसके लिए पुरुष नहीं वरन् स्त्री ही जिम्मेदार है। इस विषय में मेरी चीनरी हेसी अपनी पुस्तक 'विमेन ऐन्ड डिसेब्लिटी इक्वालिटी ऑप़ ऑपचुनिटी' में लिखती हैं- "एक शारीरिक या मानसिक रूप से विकलांग महिला इस समाज में दोहरी मार झेल रही है। महिलाएं पुरुषों के लिए एक उपभोग की वस्तु हैं यह जग जाहिर है। लेकिन इसी समाज में विकलांग महिला की स्थिति और भी क्रूरतापूर्ण और दयनीय है।" यही कारण है कि विकलांग होने मात्र से न केवल सामाजिक संबंध बल्कि रक्त संबंधों में भी परिवर्तन होते देरी नहीं होती। विकलांग होने से पूर्व शालिनी का पति उसे अपार प्रेम करता है। परंतु विकलांग होने पर उसका वही प्रेम घृणा और उपेक्षा में बदल जाता है। यथा— "सुनो न!...बोलो कान तो खुले हैं मेरे। राजेश चाहकर भी उसके पास नहीं जा पाया था।"प्रायः यह देखा गया है कि विकलांग पुरुषों की तुलना में विकलांग स्त्रियों को अधिक चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। कार्यक्षेत्र से लेकर पारिवारिक तथा सामाजिक जीवन में जहाँ उसे नितांत सहयोग की आवश्यकता होती है वह स्वयं को पृथक और एकांगी महसूस करती है, जबकि विकलांग पुरुषों के समक्ष यह चुनौती थोड़ी कम होती है । लेखिका ने विकलांग स्त्री पुरुष के जीवन के मध्य इस अंतर को स्पष्ट किया है । उपन्यास में दद्दा जी उर्फ़ डॉ अविनाश की पत्नी उन्हें वापस अपने साथ इंगलैंड चलने का प्रस्ताव रखती है, जिसे वे अस्वीकार कर देते हैं। वहीं शालिनी की स्थिति इसके विपरीत है, न तो उसका पति उसकी खबर ही लेता है और न ही घर वापसी का कोई प्रस्ताव ही उसे मिलता है। वह इस जीवन संग्राम में निरा एकांगी है।देश में विकलांग स्त्रियों की स्थिति किसी से छिपी नहीं है, न ही उनकी प्रतिभा और क्षमता पर संदेह किया जा सकता है। जहाँ उन्हें परिवार, समाज तथा सरकारी सहयोग का लाभ मिल रहा है, वहाँ वे निरंतर कीर्तिमान गढ़ रही हैं। चाहे 'ज्यों मेहँदी को रंग' की शालिनी हो या 'तुम्हारे हिस्से का चाँद' की सावित्री। ये दोनों ही स्त्रियाँ पारिवारिक, सामाजिक उपेक्षाओं के बावजूद जीवन को अपनी शर्तों पर जीती हैं और जहाँ कहीं इन्हें तनिक भी सहयोग तथा समान अवसर मिलता है वे समाज एवं जीवन दोनों की दिशा और गति परिवर्तित करने में समर्थ हैं। किंतु इतने भर से उनकी समस्याएं और चुनौतियाँ कम नहीं हो जाती हैं। आज हमारे समक्ष प्रश्न यह है कि कब तक समाज और परिवार विकलांग स्त्रियों के प्रति नकारात्मक तथा उपेक्षापूर्ण दृष्टि अपनाएगा? कब तक उसके व्यक्तित्व को सीमित और कुंठित किया जाता रहेगा? कब तक विकलांग पुरुषों से उसकी तुलना कि जाती रहेगी? इन सभी प्रश्नों के उत्तर हमें तलाशने होंगे, तभी विकलांग स्त्रियों की स्थिति में सुधार के साथ-साथ समतामूलक समाज की संकल्पना का सप्रा साकार हो सकता है।गोवा की पूर्व राज्यपाल प्रख्यात लेखिका मृदुला सिन्हा का 18 नवंबर को दुखद निधन हो गया। उनके साहित्यिक, सामाजिक और राजनीतिक अवदान को लोग निरंतर याद रखेंगे। मैं अक्सर जिन मानवीय और भारतीय मूल्यों के साथ चल कर स्त्री-विमर्श को देखने की बात करता हूँ, वे समस्त मूल्य अगर किसी

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal |

| Volume 5, Issue 1, January 2018 |

एक लेखिका में गरिमापूर्ण दीखते थे, उस विदुषी का नाम था, मृदुला सिन्हा। यह मुँहदेखी बात नहीं है। उनका समग्र लेखन इस बात की खुली गवाही है। इसलिए अगर मैं उनको भारतीय मूल्यों की प्रखर प्रवक्ता कहूँ, तो यह असंगत न होगा। स्त्री-मुक्ति की वकालत भी वे निरंतर करती थीं लेकिन मुझे वे महादवी वर्मा की परम्परा की ही लेखिका लगती रहीं। महादेवी वर्मा के अवदान से हम परिचित हैं। उनके जीवन के संघर्ष को भी हम सब जानते हैं। उन्होंने एक जगह लिखा भी है कि मैं भारतीय संस्कृति की परिधि में रह कर ही स्त्री-मुक्ति की बात करती हूँ। इसका मतलब यह कि जो कुछ हमारे श्रेष्ठ सनातनी मूल्य हैं, महादेवी जी उनके साथ है। अपने वक्तव्यों में मृदुला जी भी आधुनिकता की बात करती रहीं, लेकिन उसकी जड़ में भारतीय सांस्कृतिक-बोध भी सन्निहित होता था। यही कारण है कि इस वक्त के स्त्री लेखन में जिन दो-चार लेखिकाओं में नैतिकता की प्रखरता दिखती है, उनमें मृदुला जी शीर्ष पर दिखाई देती हैं। बांग्ला की आशापूर्णा देवी भी इसी परम्परा की थी। अपने समय में सुभद्राकुमारी चौहान जैसी कुछ लेखिकाएं भी थी, जिन्होंने भारतीय मूल्यों की अनदेखी कभी नहीं की। मृदुलाजी में ऐसी ही श्रेष्ठ लेखिकाओं का विस्तार दीखता है। यह कम बड़ी बात नहीं कि उन्होंने पूर्णकालिक लेखन के लिए सरकारी नौकरी छोड़ दी और जीवन सृजन को समर्पित कर दिया।[13]

मृदुलाजी समग्र लेखन की विशेषता यही है कि उनमे नयापन तो है लेकिन परम्परा और संस्कृति के प्रति गहन लगाव है, रागात्मक बोध भी है। वे महानगरों में रहने वाली जड़ से कटी लेखिकाओं में से नहीं है। मृदुला जी के लेखन मे पश्चिमीकरण नहीं है। उनके लेखन में पूरब की लाली है जिसकी आभा में उनका साहित्य दीप्त होता रहता है। नाम के अनुरूप ही वे मृदुल है। मृदुभाषी भी है और मितभाषी भी। उनसे मेरा कोई अंतरंग परिचय नहीं है। दो एक बार वे रायपुर आई, तब उनसे आत्मीय भेंट हुई। एक कार्यक्रम में उनके साथ मंच पर बैठने का सौभाग्य भी मिला। खुशी इस बात कि वे मेरे काम से थोड़ा-सा परिचित भी थीं। मेरे साहित्यिक मित्र संजय पंकज ने एक रोचक संस्मरण सुनाया। पिछले साल मुझे एक सम्मान मिला। अनेक पत्रिकाओं में उस की खबर प्रकाशित हुई थी। मृदुला जी साहित्यिक पत्रिकाएं तो पढ़ती ही रहती हैं। उन्होंने भी वो खबर देखी थी। एक बार जब संजय जी से उनकी कहीं भेंट हुई तो उन्होंने उनको बधाई दे दी कि आपको फलाँ सम्मान मिला है, तो संजयजी ने कहा, "मुझे नहीं, गिरीश पंकज को मिला है।" यह सुनकर वे मुस्करा दी। एक और घटना जो बिलकुल मुझसे जुडी हुई है। वो यह है कि एक केंद्रीय मंत्रालय की हिंदी सलाहकार समिति के लिए उन्होंने मेरे नाम की अनुशसा की। मंत्रालय से मेरे पास पत्र भी आया कि अपना बायोडाटा भेज दीजिये। तभी मुझे ज्ञात हुआ क्यों कि पत्र में अधिकारी ने लिखा था कि मृदुलाजी ने आपके नाम की अनुशंसा की है। यह उनके राज्यपाल बनने के कुछ समय पहले की ही बात है। इसे अपना सौभाग्य ही मानता हूँ कि देश की एक बड़ी लेखिका बड़ा हृदय भी रखती हैं और वे लोगों को पहचानती भी है। उनमे खासियतें अनंत है। एक लेखक के नाते मैंने जो देखा वो यह कि वे आज भी (महामहिम होने के बावजूद) लेखकों के बीच जाना पसंद करती थीं और प्रोटोकॉल को भी किनारे रख देती थीं। वे जब किसी साहित्यिक समारोह में जाती, तो विशुद्ध लेखक की तरह ही रहतीं। विश्व पुस्तक मेले में वे लेखकों के बीच लेखक की तरह ही बैठती रहीं। सृजनधर्मियों के बीच कोई बंधन नहीं रहता। वे सबसे प्रेम से मिलती और खुल कर अपनी बात रखती। मौका पड़ने पर लोक गीत भी सुना देतीं। एक जगह उन्होंने सुनाया भी कि "सरौता कहाँ भूल आई प्यारी ननदिया"। व्यंग्यकारों के बीच आती, तो व्यंग्य भी पढ़ती। सहजता-सरलता ही व्यक्ति को शिखर तक पहुंचा देती थी। विनोद करना मृदुलाजी का सहज स्वभाव था। एक बार उन्होंने कहीं कहा था, "मेरे बालों पर मत जाइए। इसे तो मैंने सफेद रंग कराया है। मैं तो अभी भी बयालीस साल की उम्र के बराबर ही काम करती हूँ"। मृदुला जी की पत्रिका 'पाँचवाँ स्तम्भ' के हम लोग नियमित पाठक रहे। पत्रिका का शीर्षक ही उनकी सोच को दर्शाने वाला है पत्रकारिता भी प्रजातंत्र का एक स्तम्भ है। इस पत्रिका में समकालीन समय और समाज के अनेक महत्वपूर्ण मुद्दे प्रमुखता के साथ सामने आते रहे हैं और उन पर गंभीर विमर्श भी होता रहा है। उनके लेखन की लगन से हम सब परिचित ही है। उनका चर्चित उपन्यास 'ज्यों मेहदी को रंग' तो पाठ्य पुस्तक का हिस्सा भी बना। इसके अतिरिक्त 'घरवास', 'नई देवयानी', 'अतिशय' और 'सीता पुनि बोली' जैसे उपन्यास भी हैं, जिनमे भारतीय स्त्री के जीवन संघर्ष और उसकी अस्मिता के दर्शन हमें होते हैं। भारतीय मनोविज्ञान की सुंदर व्याख्या उनके लेखन का केन्द्रीय तत्व है। उनकी कहानियों और निबंधों में भी हम मिट्टी की सोंधी महक पाते हैं। वे देशज अनुभूतियों से लबरेज लेखिका थीं। महानगर में रहते हुए भी वे अपने लेखन और विचार के द्वारा बार बार गाँव लौटती थीं। अनेक लेखिकाएँ महानगर की कहानियां कह रही हैं और विकृतियों को महिमा मंडित भी कर रही हैं, लेकिन मृदुला जी के यहां विकृतियों को स्वीकृति नहीं मिलती, वरन उसका तिरस्कार ही दीखता है।[14]

परिणाम

वैसे तो एक दार्शनिक प्रश्न के अनेक जवाब हो सकते थे। विज्ञान एवं दर्शन में यही तो अंतर है। दर्शनशास्त्र में कहीं दो-दो चार ही होते हैं तो कहीं पाँच भी हो सकते हैं या मात्र तीन। जब टाँगें कटी हों तो अन्य अंगों की सुडौलता की क्या जरूरत। आने-जानेवालों की निगाहें तो अभावग्रस्त स्थान से ही जा टकराएँगी। स्त्रियों को आदर्श का नशा चढ़ जाए तो वे पुरुषों से कई कदम आगे बढ़ जाती हैं। एक के लिए जीने से बेहतर है अनेक के लिए जीना। जो जहाँ जिस रूप में है, आकाश उसे वैसा ही दिखता है; उतना ही दिखता है। उसके लिए उतना ही भर आकाश उसका होता है। ईश्वर ने रोने की शक्ति देकर वरदान ही तो दिया है मनुष्य को। आँखों को धोकर साफ-सुथरा करनेवाला अश्रु। स्रोत अंदर न होता तो मनुष्य की आँखों में कितना कचरा इकट्ठा हो गया होता, उसकी दृष्टि ही चली गई होती। नारी चाहे कितनी ही कम उम्र की हो, पुरुषों को समझने में दक्ष होती है। इसीलिए तो सेवा-काम स्त्रियों के जिम्मे दिया जाता है। —इसी पुस्तक से दिव्यांग-जीवन का दिग्दर्शन कराता मर्मस्पर्शी, मानवीय संवेदना से भरपूर त उपन्यास। ‘अहल्या

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal |

| Volume 5, Issue 1, January 2018 |

उवाच' हिंदी की प्रख्यात लेखिका डॉ. मृदुला सिन्हा का अद्यतन ग्रंथ है, जिसमें पुराख्यान की आवृत्ति-मात्र नहीं, आधुनिक प्रश्नों की सहज अभिव्यक्ति लक्षित होती है। प्रातःस्मरणीया पंच कन्याओं में अन्यतम अहल्या के शील एवं सतीत्व का यह आत्मकथात्मक आख्यान तथाकथित नारीवाद के दुराग्रह से मुक्त है। पितृसत्ता के संदर्भ में स्त्री-चित्त के मनोविज्ञान की विश्वसनीय प्रस्तुति इसकी विशेषता है, किंतु यहाँ आधुनिक स्त्री-विमर्श की यांत्रिकता एवं गतानुगतिकता के स्थान पर भारतीय संस्कृति में संप्राप्त शिव-शक्ति के अर्द्धनारीश्वरत्व की मान्यता प्रतिष्ठापित की गई है। 'उपन्यास' एक पश्चिमी काव्यरूप है, किंतु यह ग्रंथ भारत की उस परंपरागत औपन्यासिक अवधारणा की प्रतीति कराता है, जिसे मृदुलाजी 'सीता पुनि बोली', 'विजयिनी', 'परितप्त लंकेश्वरी' आदि में उदाहृत कर चुकी हैं। 'उवाच' शब्द के द्वारा वे भारत के 'कथा-कोविदों' की शैली का ही स्मरण दिलाती हैं। वर्णन-क्रम में लोकसंस्कृति के उपादानों के विनियोग से भी इस तथ्य का सत्यापन होता है। आचार्य कुंतक ने प्रबंधगत कथा-विन्यास का विश्लेषण करते हुए 'प्रकरणवक्रता' और 'प्रबंधवक्रता' का उल्लेख किया है। ज्ञातकथा में नवीन प्रसंगों की उद्भावना तथा मूल इतिवृत्त की अभिनव व्यंजना में उक्त वक्रोक्ति-भेदों की पहचान की जा सकती है। मृदुलाजी ने चिराचरित कथा को संशोधित करते हुए उसे नई दिशाओं में मोड़ा है। पुरावृत्त और आधुनिकता के संग्रथन में उनकी कारयित्री प्रतिभा की सक्रियता देखी जा सकती है। 'मिथक' के नवीकरण की यह प्रक्रिया 'अहल्या उवाच' की मौलिकता का निर्धारण करती है। यह उपन्यास रामकथा को एक नव्य आयाम प्रदान करता है। मिथिलांचल की अहल्या के समग्र जीवनवृत्त पर केंद्रित इस कृति की परिणति युवाशक्ति के प्रतीक राम के युगांतकारी कर्तृत्व में दृष्टिगत होती है, किंतु मातृशक्ति की महिमा और नई मर्यादा के संस्थापन की यह कथा समाज की प्रस्तरीभूत चेतना के उस अभ्युत्थान का बोध कराती है, जिसके नियामक राम हैं, जो स्वभावतः अहल्या की चारित्रिक चमक एवं पात्रता से अभिभूत हैं। इस दृष्टि से यह रचना राम और अहल्या, दोनों का महत्त्व-मंडन करती है। महीयसी मृदुलाजी की रचनाधर्मिता की यह गौतमी धारा न केवल उनकी अजस्र संवेदनशीलता और लोक-संस्कृति का साक्षात्कार कराती है, अपितु क्षत-विक्षत जीवन-मूल्यों के युग में भारतीय जीवनादर्शों के प्रति आकर्षण भी उत्पन्न करती है। मृदुला की का जन्म -मृदुला जी का जन्म बिहार के मुज्जफरपुर जिले के छपरा गाँव में 27 नवम्बर 1942 को हुआ था उनकी माँ श्रीमती अनुपा देवी पिता जी का नाम श्री छबीले सिंह था और उनकी दादी जी उन्होंने अक्सर अपने लेखों में उन्हें स्मरण ही नहीं किया बल्कि उनके माध्यम से लोक संस्कृति से अपने पाठकों को जोड़ा है| मनोविज्ञान में एम.ए करने के बाद बी.एड. कर वह कालेज में प्रवक्ता एवं मोतिहारी के विद्यालय में प्रधानाचार्य रही हैं लेकिन नौकरी को अलविदा कह कर हिंदी साहित्य सेवा में लग गयीं उनके पति डॉ राम कृपाल सिन्हा कालेज में अंग्रेजी के प्रवक्ता थे वह बिहार सरकार में मंत्री रहे हैं अब श्रीमती मृदुला जी राजनीति से जुड़ गयीं| आपतकालीन घोषणा के बाद उन्होंने जयप्रकाश नारायण के नेतृत्व वाली क्रान्ति में भी सक्रियता दिखाई थी वह भाजपा महिला मोर्चा की अध्यक्षा भी रह चुकी हैं | अटल जी के नेतृत्व वाली सरकार में वह केन्द्रीय समाज कल्याण बोर्ड व मानव संस्थान विकास मंत्रालय की अध्यक्षा रहीं हैं | वह गोवा राज्य की पहली महिला राज्यपाल रहीं हैं |[2]

विशेष -यह हमारे लिए सौभाग्य की बात है मृदुला जी अखिल भारतीय साहित्य परिषद की उपाध्यक्ष रहीं हैं |आशा रानी वोहरा द्वारा स्थापित सूर्या संस्थान की आजीवन सदस्य एवं अध्यक्षा भी थीं लेकिन गोवा की राज्यपाल पद पर आसीन होने के बाद संस्थान की अध्यक्षा का पद छोड़ा लेकिन संस्थान से उन्होंने सम्बन्ध कभी नहीं तोड़ा उन्हें प्यार से हम दीदी कहते हैं राज्यपाल का पद भार सम्भालने के बाद उन्हें सम्मानित करने के लिए कैलाश सभागार में आमंत्रित किया गया हम सब उनको अपने बीच पाकर अत्यंत उत्साहित थे व प्रसन्न वह वैसी ही अपनी थीं जैसे पहले रही हैं| बहुमुखी प्रतिभा की धनी सरल सीधी भाषा में अपनी बात को दिल में उतार देने वाली श्रीमती मृदुला जी की दृष्टि पारखी पत्रकार जैसी है वह लेखिका , कवियत्री ,समाज सेवी राजनीति से जुड़ी और अच्छी वक्ता हैं उनके भाषणों में उनका अपनी पृष्ट भूमि से जुड़ाव साफ़ नजर आता है[4]

मृदुला जी की साहित्य साधना -उन्होंने 46 से अधिक पुस्तके लिखीं जैसे राजपथ से लोकपथ पर (जीवनी),नई देवयानी ,ज्यों मेंहदी का रंग.घरवास ,सीता पुनि बोली (उपन्यास)यायावरी आँखों से ,विकास का विश्वास (लेखों का संग्रह)देखन में छोटे लगे ,बिहार की लोककथाएँ -1 ,बिहार की लोककथायें-2 ढाई बीघा जमीन, साक्षात्कार (कहानी संग्रह) हैं मात्र देह नहीं है औरत (स्त्री विमर्श), विकास का विश्वास नाम से लेखों का संग्रह है |उनकी कृति पर 'ज्यों मेहँदी के रंग लघु फिल्म भी बनाई गयी | एक थी रानी ऐसी भी " उनकी कहानी राजमाता विजया राजे सिन्धिया पर एक फिल्म भी बनी

उनको अनेक पुरुस्कारों से नवाजा गया उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान से साहित्य भूषण सम्मान व दीनदयाल उपाध्याय पुरूस्कार के अतिरिक्त अनेक सम्मान प्राप्त हो चुके है | उनका सबसे बड़ा सम्मान लोक संस्कृति से पाठकों का जुड़ने के बाद मुस्कराना, लेखों को दुबारा पढ़ना है | उनके लेखों,उपन्यासों कहानियों के विषय अधिकतर सामाजिक हैं उनकी पुस्तक 'एक थी रानी ऐसी भी' राजमाता विजय राजे सिंधिया पर फिल्म भी बन चुकी है | जिसका टेलर अभिताप बच्चन जी ने लांच किया था |मासिक पत्रिका 'पांचवा स्तम्भ'-उन्होंने मासिक पत्रिका 'पांचवा स्तम्भ' का सम्पादन एवं संचालन किया| वह अपनी पत्रिका का नाम पांचवा स्तम्भ रखना चाहती थीं पत्रिका के नाम करण के लिए उन्होंने श्री अटल बिहारी बाजपेयी जी से विचार विमर्श किया श्रीमती मृदुला जी के शब्दों में उन्होंने श्री अटल जी से अनुरोध किया जब तक वह पत्रिका के नाम एवं इसके महत्व पर प्रकाश नहीं डालेंगे तब तक यह नाम सार्थक नहीं होगा श्री अटल जी ने चर्चा ही नहीं पाँचवा स्तम्भ के महत्व पर भी प्रकाश डाला |मृदुला जी ने पत्रिका के मूल उद्देश्य और उसके महत्व को बढ़ाने का श्रेय उन्हें दिया है उनके अनुसार पाँचवा स्तम्भ सर्वजन हिताय का संदेश देता है | भारतीय

सभ्यता और संस्कृति का मूल उद्देश्य है न मैं भूखा रहूँ न मेरा पास पड़ोस भूखा रहे सभी सुखी रहें |प्रजातंत्र के चार खम्बे है पहला व्यवस्थापिका भारतीय संसद के दो सदन हैं उच्च सदन राज्य सभा इसमें राज्यों को प्रतिनिधित्व दिया गया है इसके 12 सदस्यों का चयन राष्ट्रपति महोदय करते हैं यह विभिन्न क्षेत्रों से जुड़े महानुभाव हैं | निम्न सदन लोकसभा में जनता के चुने हुए प्रतिनिधि हैं | दोनों सदनों में पास होने के बाद विधेयक राष्ट्रपति महोदय के पास हस्ताक्षर के लिए भेजा जाता है |दूसरा खम्बा, कार्यपालिका जनता द्वारा चुने गये लोकसभा के सांसदों में बहुमत दल के नेता को राष्ट्रपति सरकार बनाने के लिए आमंत्रित करते हैं उनके आदेश पर मंत्री मंडल का गठन किया जाता है | तीसरा न्यायपालिका (सर्वोच्च न्यायालय) अन्य कार्यों के अलावा प्रमुख कार्य देश के संविधान की रक्षा करना है और चौथा जनमत निर्माण करने में प्रभावशाली भूमिका निभाने वाला मीडिया जिसमें प्रिंट मीडिया का अपना स्थान है |मृदुला जी के अनुसार पाँचवा स्तम्भ समाज कल्याण के विषयों को सामने रखते हुए पाठकों में जागरूकता लाना है| यह साहित्यिक एवं सामाजिक पत्रिका है अटल जी ने नाम पर सहर्ष स्वीकृति दी |अपना ही नहीं सबके विकास में योगदान दें यहीं संवेदन शीलता है सच्चे अर्थों में इंसानियत |पाँचवा स्तम्भ में इनका एक लेख अवश्य होता है |लेखों में उनका पत्रकारिता से जुड़ा व्यक्तित्व साफ झलकता है |वह अपनी जन्मभूमि बिहार को कभी नहीं भूलीं दिल्ली में उनका निवास रहा है लेकिन हर लेख एवं भाषणों में बिहार की संस्कृति की झलक मिलती है| श्रीमती मृदुला जी ने अपने कार्यों समाज सुधार के प्रयत्नों को एनजीओ का नाम नहीं दिया | उन्हें एन में नकारात्मक झलकती दिखाई देती है |कई एनजीओ केवल कागज पर ही बन कर रह जाते हैं | कुछ ने एनजीओ को अन्य व्यवसायों की भांति व्यवसाय बना लिया है बड़ी शान से कहते हैं वह एनजीओ चलाते हैं समाज सेवा के नाम पर सरकारी सहायता पाने के इच्छुक रहते हैं अब तो मोदी सरकार में कुछ एनजीओ पर रोक लगाने की कोशिश हो रही है जिन पर देश विरोधी गतिविधियों में लिप्त होने का शक है | ऐसे एनजीओ भी हैं जो बिना सरकारी अनुदान के अपने क्षेत्र विशेष में सेवा कर रहे हैं| पाँचवा स्तंभ समाज की सेवा के लिए सकारात्मक सोच को बढ़ावा देता है |[6]

श्रीमती मृदुला जी का मानना है मतदान के समय समाजसेवी संगठनों को आगे आकर मतदाताओं से सम्पर्क कर उन्हें समझाना चाहिए मतदान मतदाता का अधिकार है हमारा संविधान बिना किसी लिंग ,जाति धर्म ,अमीरी ,गरीबी शिक्षित और अशिक्षित का भेद किये सबको मतदान का अधिकार देता है सबके वोट का मूल्य एक है |18 वर्ष के हर मतदाता को अपने प्रतिनिधियों को चुनने का हक दिया गया है मतदान पावन कर्तव्य भी है सबको मतदान के लिए प्रेरित करना चाहिए| चुनाव लोकतंत्र का सबसे उत्तम पर्व है हाँ किसी दल विशेष के लिए मतदान की अपील करना राजनीतिक हो सकता है | भारत विश्व का सबसे बड़ा प्रजातांत्रिक देश है | वह बड़ी बेबाकी से आम व्यक्ति से जुड़ती हुई दादी जी को याद करती हैं दादी आधी रात को बच्चों द्वारा जलाई गयी लेकिन बुझी हुई लकड़ी से सूप को पीटती हुई घर की परिक्रमा करती हुई बुदबुदाती थीं 'लक्ष्मी जागे ,दरिद्रता भागे' लक्ष्मी जगाने का अर्थ ही घर में खुशहाली लाना है उनके अनुसार मेरा मन दोहराता है 'मतदाता जागे कुशासन भागे' उनकी बात बड़ी व्यवहारिक है हमारा आपका भी अनुभव होगा एक वर्ग प्रजातंत्र की सबसे अधिक बात करता है एक दिन अखबार न मिले बेचैन हो जाता है लेकिन मतदान के दिन छुट्टी होती है उसके साथ दूसरी छुट्टियाँ मिला कर घूमने निकल जाता है यदि साथ में बच्चे हैं तो भावी मतदाता को भी अनजाने में मतदान से बचने की शिक्षा दे देता है |श्रीमती मृदुला जी मंचासीन महानुभावों के स्वागत में फूलों के गुलदस्तों के स्थान पर फलों की टोकरी को प्रमुखता देती हैं फूलों का गुलदस्ता अतिथिगण अक्सर वहीं छोड़ जाते हैं लेकिन फलों की टोकरी प्रेम से साथ ले जाते हैं |पाँचवा स्तम्भ का एक अंक विदेशों में बसे प्रवासी भारतीयों के लिए भी था | देश छूटा परदेस में वास हुआ लेकिन उन्होंने अपनी संस्कृति को बचाते हुये ऐसे प्रवासियों के अनुभवों और विचारों को भी पाँचवा स्तंभ के विशेषांक में स्थान दिया जिस देश में निवास हैं वहाँ के कल्चर का भी सम्मान किया लेकिन कभी भारतीयता को नहीं भूले |आज की बदलती परिस्थितयों और वातावरण में इन्सान को अपनी मिटटी से जोड़ने की कला में श्रीमती मृदुला जी माहिर हैं| प्रवासी भारत वंशियों को उन्होंने पाँचवा स्तम्भ में अपने अनुभव और विचार लिखने का अवसर दिया उन्हीं में से एक मैं भी थी वर्षों ईरान में परिवार सहित रहने के बाद जाना वहाँ बसे प्रवासी भारतीयों ने पर्शियन कल्चर को कैसे अपना लिया | फर्श पर कालीन दीवार के सहारे लगी पुश्तियों के सहारे बैठना नाश्ते के लिए छोटे पायों वाली मेज ,फर्श पर सिफरा बिछा कर मिल कर भोजन करने की प्रथा को सहर्ष अपनाया | 21 मार्च के दिन पर्शियन उत्सव 'नौरोज' नये वर्ष का उत्सव धूमधाम से मनाते हैं जिसमें होली का उल्लास ,लोहड़ी का अग्नि पूजन भारत में चैत मास के नवरात्र में बोया जाने वाला मिटटी के कटोरे में जों ईरान में गोंदुम (गेहूं) को कटोरे में बोते हैं अंत में सीसदा बदर के दिन रुद्खाने में प्रवाहित करना शामिल है |[8]

उनका लेख 'ई जहजवा वैरी हो –-'उन परदेस में बसे भारतवंशियों की पीड़ा को दर्शाता है जिन्हें रोजी रोटी की खोज में परदेस जाना पड़ा यह लोग मजदूरी करने गये थे अधिकतर पीछे अपनी पत्नी को छोड़ कर गये आज की बदलती परिस्थितयों और वातावरण में इन्सान को अपनी मिटटी से जोड़ने की कला में श्रीमती मृदुला जी माहिर हैं| कुछ पत्नियाँ जिद कर पतियों के साथ भी गयी श्रीमती मृदुला जी ने उस जिद को लोक गीत की निम्न पंक्तियों में दर्शाया[10]

'हमहू जायब तोहरा संग परदेसिया'

पत्नी को रुपया पैसा या गहना देकर संतुष्ट नहीं किया जा सकता उसे अपने पति का संग साथ भी चाहिए पत्नी थके हारे पति की पीड़ा मीठे बोल बोल कर हर लेगी| पत्नी के साथ वह परदेस में भी अकेला नहीं होगा |

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal |

| Volume 5, Issue 1, January 2018 |

उन्होंने मिथलांचल में गाये जाने वाले बारहमासा

यही प्रीति कारण सेतु बांधल है| सिया उद्देश्य श्री राम हैं ...”

अच्छा जीवन जीने की चाह के लिए पैसा चाहिए अत: खटने (कमाने) के लिए अपनी नव विवाहिता पत्नीयों को छोड़ कर कई परदेस चले जाते हैं पत्नी को साथ न ले जाने की असमर्थता और नव विवाहिता की पीड़ा हर लोक संगीत में झलकती है |अकेली पत्नी के मन का यही भाव लम्बा इंतजार मैने पंजाब में गाये जाने वाले लोकगीतों में भी देखा है |वह गोवा में भी वह शांत नहीं रहीं उन्होंने वहाँ की समस्याओं का गहराई से अध्ययन किया जबकि वह मानती हैं गोवा समस्याओं वाला राज्य नहीं है| गोवा में रहते हुये भी वह मुजफ्फरपुर के साहित्यिक एवं सामाजिक कार्यक्रमों में हिस्सा लेती रहीं सभी मंचों से उन्होंने बिहार की लोक कलाओं , लोक संस्कृति लोकगीतों को आवाज देकर खूबसूरती से उनका मंचन करवा कर उनका महत्व बढ़ाया |अपने एक लेख में सच्चा पुरुष कौन है यक्ष द्वारा युधिष्ठर से पूछे गये प्रश्न का वह क्या उत्तर देते हैं जिसमें भारतीय संस्कृति सार मृदुला जी ने व्यक्त किया है मनुष्य को देवता ,अतिथि अपने उन कुटुंबीजनों का भी भरण -पोषण करना चाहिए जो उन पर निर्भर हैं लेकिन जो दिखाई नहीं देते अपने पितर जो स्वर्ग सिधार चुके हैं और प्यासी आत्माओं को पानी देने की परम्परा है ऐसा मनुष्य ही मनुष्य कहलाने के योग्य हैं |आज कल के दंपत्ति मान कर चलते हैं एक ही बच्चा होना चाहिए जिसे वह सब कुछ देंगे जिन अभावों को उन्होंने झेला है उनका बच्चा नहीं देखेगा मृदुला जी परिवार में एक ही बच्चा होना को सही नहीं मानती अकेला बच्चा उदास और दुखी रहता है घर में दो बच्चे होने चाहिए इससे बच्चे बाँट कर खाना सीखते हैं उनके व्यक्तित्व का सही विकास होता है जबकि |पति पत्नी का रिश्ता बिगड़ना नहीं चाहिए गृहस्थी प्रेम से चलनी चाहिए |घर को तर्कशास्त्र का अखाड़ा नहीं है वह कहती हैं भारत की महिलायें पुरुष मुक्त समाज की समर्थक नहीं हैं नारी पुरुष की सहयोगी है| विवाह का उद्देश्य मनोरंजन नहीं है बल्कि कर्तव्य पालन के लिए है अधिकार कतर्व्य पालन से भी स्वयं मिल जाते हैं विवाह से ही परिवार की शुरुआत होती है |परिवार की गृहणी अर्थात माँ का सबसे बड़ा गुण सहना और क्षमा करना है अत : विवाह संस्कार है व्यापार नहीं है|[12]

नारी शिक्षा,प्रगतिशीलता और नारी सशक्तिकरण की प्रबल समर्थक हैं- उनके अनुसार महिलायें मान कर चलती थीं उनका फर्ज है शादी से पहले अपने मायके में परिवार का ध्यान रखना है जहाँ उनका जन्म हुआ उन्हें पाला पोसा गया बड़ी हुई उनका विवाह कर दिया जायेगा उनका अपना घर सुसराल है वहाँ उन्हें गृहस्थी सम्भालनी है सास ससुर की सेवा करना ,सन्तान को जन्म देना उन्हें पालना, सुख या दुःख दोनों यहीं हैं देश आजाद होने से पहले ही महिलाओं की शिक्षा का प्रसार होने लगा वह स्कूल जाने लगीं महिलाओं ने मेहनत से अपना भविष्य संवारा| माता पिता एवं परिवार का कर्त्तव्य है बेटियों को पढ़ायें उन्हें उचाईयों को छूनें दें , जल थल नभ में जाने दीजिये बेटे को बेटी की तरह पालें न कि यह कहें मैने बेटी को बेटे की तरह पाला है | बेटियों को अपने गुण उजागर करने का भरपूर मौका मिलना चाहिए |उनके चार सबक उनकी अच्छी सोच को दर्शाते हैं |चूड़ियों पर गर्व करो वह नारी की शक्ति का प्रतीक हैं, भोजन बनाने का समय भले न मिलें परन्तु परोसना कभी न भूलें अर्थात अतिथि सत्कार जब भोजन बनेगा तभी तो परोसेंगे, बेटी को दुलार दो लेकिन बहू को अधिकार उन्होंने दिया उनकी बहू संगीता सिन्हा पांचवा स्तम्भ की सम्पादक हैं उनकी देख रेख में पांचवा स्तम्भ फल फूल रहा है और वह राज्यपाल का पद भार सम्भाल रहीं हैं | वह कहती हैं मकान ऐसा खरीदें जिसमें दादा दादी के रहने सोने आराम करने की पर्याप्त जगह हो | मैं सदैव बड़े बूढों के पास बैठने का समय निकालती हूँ उनके अनुभवों से शिक्षा लेती हूँ बुजुर्गों से प्रेम करें उनके मनोभावों का ध्यान रखें आप बड़े बूढ़ों के पास बैठे उनसे बातें करें |सच्चाई से देंखें हमारे बुजुर्ग फलदार वृक्ष है | योरोप में मंदी आई नौकरियाँ गयीं लोग अपने माता पिता के पास लौट गये परिवार संयुक्त होने लगे यहाँ उन्हें आसरा भी मिला प्रेम भरी छाया भी | भारत में भी गावँ से जुड़ा परिवार तीज त्यौहार पर अपने घर जरूर जाता है मुश्किल की घड़ी में अपने गाँव लौटता है परिवार उन्हें सहारा देता है|वह आज की तरक्की पसंद महिलाओं के मन के करीब जाती हैं उनके पास हर सुख सुविधा के साधन हैं उन्हें अर्जित करने में उनका भी हाथ है क्या वह आनन्दित हैं उनके जीवन में सकून है ? वह अकेली होती जा रही हैं पति पत्नी के सम्बन्धों के बीच में हमारी न होकर मेरी आमदनी ,मेरी जरूरतें ,मेरी जिन्दगी तक सीमित हो गयी हैं हमारी संस्कृति में अपने लिए जीना मानव जीवन का उद्देश्य नहीं माना जाता ऐसी महिलायें भी है जिनके यहाँ सुख सुविधाओं का अभाव है फिर भी वह खुश नजर आती हैं |छात्र और छात्रा प्राईमरी और उच्च शिक्षा एवं व्यवसायिक शिक्षा का एक सा पाठ्यक्रम है कैरियर का लक्ष्य धन कमाना है उदाहरण के तौर पर एक डाक्टर डाक्टर से विवाह करना चाहता है उद्देश्य अपना नर्सिंग होम या अस्पताल बनाना चाहते हैं कार्य क्षेत्र में दोनों की मेहनत समान है एकल परिवार घर में भोजन कौन बनाये बच्चे कौन पाले दोनों को कैरियर में लगे रहे पति अपेक्षा रखता है यह काम पत्नी के हैं ऐसा घर न बन पायेगा न हीं बस पायेगा |वह नारी की सुरक्षा के लिए भी चिंतित रहती हैं किसी दुर्घटना के घटने के बाद सरकार की सुरक्षा व्यवस्था पर सवाल खड़े किये जाते हैं दुखी सभी होते हैं लेकिन समाज निष्पक्ष होकर आत्म निरीक्षण नहीं करता |[13]

अखिल भारतीय साहित्य परिषद के 6,7,8 तक चलने वाले 15 वें राष्ट्रीय अधिवेशन के प्रथम दिन गोवा की राजपाल श्रीमती मृदुला सिन्हा जी का अध्यक्षीय भाषण सुनने का अवसर मिला जनमानस से जुड़ा भाषण,उस दिन तीखी धूप थी फिर भी उपस्थित लोग उनको मंत्रमुग्ध हो कर सुन रहे थे उनके हर विचार सामाजिक समस्याओं से जुड़े रहते हैं भाषण समाप्त होने के कुछ देर बाद घनघोर बादल छा गये मूसलाधार बारिश होने लगी | मृदुला जी सायंकालीन सत्र के कवि सम्मेलन में भी उपस्थित हुई मंच संचालकों

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal |

| Volume 5, Issue 1, January 2018 |

की अनुनय पर भी वह मंच पर नहीं बैठीं उन्होंने अन्य कवियों व कवियत्रियों के समान सबके लिये निर्धारित स्थान पर कविता पाठ किया कविता का विषय 'लड़की और साईकिल' था |बिहार के मुख्य मंत्री श्री नितीश कुमार जी ने पहली बार मुख्यमंत्री पद भार सम्भालने बाद लड़कियों को साईकिल देने का आदेश दिया था | साईकिल लड़की के लिए कितना जरूरी है श्रीमती मृदुला जी ने उसकी शब्दों से तस्वीर खींची| साईकिल लड़के से भी अधिक लड़की के लिए कितनी जरूरी है | साईकिल के हैंडल पर बेटी ने अपने पिता को भी बिठाया | भाव पूर्ण कविता महिला सशक्तिकरण का प्रतीक थी |वह स्वच्छता अभियान से भी जुड़ीं हैं महिलाओं को श्रम दान का संदेश देती हैं बेटी बचाओ, पर्यावरण की रक्षा करें उनके अनेक लेख जीवन दायनी वृक्षों पेड़ पोधों पर हैं पोधों को केवल रोप कर गिनती न गिना कर उनको संरक्षण देना चाहियें उनसे स्नेह कीजिये | वह अक्सर कहती और लिखती हैं बरगद और पीपल की जड़ में पानी देकर उसकी परिक्रमा करना आम ,महुआ,बांस की पूजा करना आवले के पेड़ के नीचे बैठ कर खाना खाना अंधविश्वास नहीं समाजशास्त्रियों द्वारा समझ बूझ कर बनाई गयीं परम्पराएं हैं नई पीढ़ियों को भी सीखनी चाहिये | हम सभी जानते वृक्ष साफ स्वच्छ हवा देते हैं पर्यावरण को शुद्ध करते हैं | नदियों में गंदगी डालने की वह सख्त विरोधी हैं | वह जब भी बिहार जाती हैं वहाँ के लोगों के साथ घुलती मिलती हैं उनका एक लेख पांचजन्य में पढ़ा था जिसमें दही जमाना भी एक कला है दादी जी हर आने वाली बहू से पूछती थीं दही कैसे जमाते हैं ?हैडिंग पढ़ कर हंसी आई थी परन्तु जब लेख पढ़ा समझ में आया लेखिका ने कैसे पाठकों को ग्राम की संस्कृति से जोड़ा था |आज तो बाजार से जमा जमाया दही खरीदने का रिवाज बढ़ रहा है |[11]

हर माँ चाहती है उसके सूर्य गुण युक्त सन्तान हो तेजस्वी हो बच्चे के जन्म के बाद सोहर में बिहार और उत्तरप्रदेश में गाया जाने वाला गीत सास पूछती है

बहू जी कौन –कौन व्रत कइली बालक बड़ा सुंदर भेल

बहू उसी भाषा में उत्तर देती है सूरज को प्रतिदिन प्रणाम किया था रविवार का व्रत रख कर नमक नहीं खाया था इससे बच्चा सुंदर और स्वस्थ है | एक पत्रकार की दृष्टि से जन समाज को देखा अच्छाई और बुराई का विश्लेषण कर उन्होंने अपने पाठकों को अपने विचारों से जोड़ा पांचवा स्तंभ उनके द्वारा 'सकारात्मक चिन्तन एवं विकास का संवाहक है' |[9]

निष्कर्ष

वे एक सुविख्यात हिन्दी लेखिका के साथ-साथ भारतीय जनता पार्टी की केन्द्रीय कार्यसमिति की सदस्य भी हैं। इससे पूर्व वे पाँचवाँ स्तम्भ के नाम से एक सामाजिक पत्रिका निकालती रही हैं।श्रीमती सिन्हा अटल बिहारी वाजपेयी के प्रधानमन्त्रित्व-काल में केन्द्रीय समाज कल्याण बोर्ड की अध्यक्ष.[4] भी रह चुकी हैं। उनकी पुस्तक एक थी रानी ऐसी भी की पृष्ठभूमि पर आधारित राजमाता विजया राजे सिन्धिया को लेकर एक फिल्म[5]भी बनी थी। मृदुला सिन्हा का जन्म श्रीमती अनुपा देवी व बाबू छबीले सिंह के यहाँ 27 नवम्बर 1942 को हिन्दू पंचांग के अनुसार राम-विवाह के शुभ दिन बिहार राज्य में मुजफ्फरपुर जिले के छपरा गाँव में हुआ था। मनोविज्ञान में एम०ए० करने के बाद उन्होंने बी०एड० किया और मुजफ्फरपुर के एक कॉलेज में प्रवक्ता हो गयीं। कुछ समय तक मोतीहारी के एक विद्यालय में प्रिंसिपल भी रहीं किन्तु अचानक उनका मन वहाँ भी न लगा और नौकरी को सदा के लिये अलविदा कहके उन्होंने हिन्दी साहित्य की सेवा के लिये स्वयं को समर्पित कर दिया। उनके पति डॉ॰ रामकृपाल सिन्हा, जो विवाह के वक़्त किसी कॉलेज में अंग्रेजी के प्रवक्ता हुआ करते थे, जब बिहार सरकार में मन्त्री हो गये तो मृदुला जी ने भी साहित्य के साथ-साथ राजनीति की सेवा शुरू कर दी। आज तक यह सिलसिला लगातार जारी है।[8]

प्रकाशित कृतियाँ

- राजपथ से लोकपथ पर (जीवनी)
- नई देवयानी (उपन्यास)
- ज्यों मेंहदी को रंग (उपन्यास)
- घरवास (उपन्यास)
- यायावरी आँखों से (लेखों का संग्रह)
- देखन में छोटे लगें (कहानी संग्रह)
- सीता पुनि बोलीं (उपन्यास)
- बिहार की लोककथायें -एक (कहानी संग्रह)
- बिहार की लोककथायें -दो (कहानी संग्रह)
- ढाई बीघा जमीन (कहानी संग्रह)
- मात्र देह नहीं है औरत (स्त्री-विमर्श)

- विकास का विश्वास (लेखों का संग्रह)
- साक्षात्कार(कहानी संग्रह)[7]

अतिशय

स्पर्श की तासीर

क ख ग

मानवी के नाते

पुराण के बच्चे

विकास का विश्वास

एक दिए की दीवाली

अंग्रेजी में अनूदित कृतियाँ[6]

Flames of Desire

मृदुला जी को उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान से साहित्य भूषण सम्मान व दीनदयाल उपाध्याय पुरस्कार के अतिरिक्त अन्य भी कई सम्मान-पुरस्कार प्राप्त हो चुके हैं।[14]

संदर्भ

1. "संग्रहीत प्रति". मूल से 2 नवंबर 2014 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 18 जुलाई 2017.
2. ↑ हिन्दी साहित्यकार सन्दर्भ कोश पृष्ठ ३०१
3. ↑ सूर्या (स्मारिका -६) पृष्ठ १८
4. ↑ "Governing Body, Social action through integrated work". SATHI. 2008-11-19. अभिगमन तिथि 2008-11-19.[मृत कड़ियाँ]
5. ↑ "Under production films". Bollywood Hungama. 2008-11-19. मूल से 4 अक्तूबर 2011 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 2008-11-19.
6. ↑ प्रकाशक: M.D. Publications Pvt. Ltd. New Delhi 1997
7. ↑ सूर्या (स्मारिका -६) सम्पादक: डॉ॰ रामशरण गौड़ पृष्ठ १८
8. डॉ॰ गिरिराज शरण अग्रवाल एवं डॉ॰ मीना अग्रवाल हिन्दी साहित्यकार सन्दर्भ कोश (दूसरा भाग) २००६ हिन्दी साहित्य निकेतन, बिजनौर (उ०प्र०) ISBN 81-85139-29-6
9. सूर्या (स्मारिका -६) सम्पादक: डॉ॰ रामशरण गौड़, श्याम विमल, डॉ॰ मदनलाल वर्मा 'क्रान्त एवं विजय विजन प्रकाशक: सूर्या संस्थान, जेड १३५-१३८, सेक्टर १२, नोएडा २०१३०१ भारत
10. ज्यों मेहँदी को रंग, मृदुला सिन्हा, प्रभात प्रकाशन, नोएडा
11. हिन्दी साहित्य का आधा इतिहास, सुमन राजे, भारती ज्ञानपीट, नई दिल्ली
12. पितृसत्ता से कितनी आज़ाद हैं महिलाएं – https://amfeminisminindia.com/2016/10/17/patriarchy-india-feminism-hindi/
13. तुम्हारे हिस्से का चाँद, शिव कुमार शिव, शिल्पायन प्रकाशन, नई दिल्ली
14. एस. शाह रजनीकांत, हिन्दी उपन्यास- सामाजिक चेतना (1961-1970), संस्कृति प्रकाशन, अहमदाबाद, संस्करण 1990